



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 164]

नई दिल्ली, शनिवार, सितम्बर 11, 1982/भाद्र 20, 1904

No. 164] NEW DELHI, SATURDAY, SEPTEMBER 11, 1982/BHADRA 20, 1904

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate
compilation

गृह मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 11 सितम्बर, 1982

निधन सूचना

सं० 3/6/82-पब्लिक—शेख मोहम्मद अब्दुल्ला के निधन से देश ने अपने महान सपुत्रों में से एक सपुत्र खो दिया है। धर्म निष्पक्षता के प्रतीक, लोकतंत्री नेता, लब्ध प्रतिष्ठित स्वतन्त्रता सेनानी और निष्ठावान समाजवादी शेख मोहम्मद अब्दुल्ला जम्मू और कश्मीर की राजनीति पर अर्धशताब्दी से अधिक समय तक छाये रहे।

2. आपका जन्म 5 दिसम्बर, 1905 को श्रीनगर के एक उप-नगर सौरा में एक शाल व्यापारी के परिवार में हुआ। आपके पिताजी का मृत्यु आपके जन्म से कुछ समय पहले हो गई थी और माताजी की मृत्यु आपके बाल्यकाल में ही हो गई। गवर्नमेंट हाई स्कूल श्रीनगर से मैट्रिक की परीक्षा पास करने के बाद आपने इस्लामिया कॉलेज लाहौर से बैचलर ऑफ साइंस की डिग्री प्राप्त की और अर्ल गढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से रसायन शास्त्र में मास्टर ऑफ साइंस की डिग्री अर्जित की। 1930 में कश्मीर वापस आने पर आपने एक स्कूल अध्यापक के रूप में अपना करियर प्रारम्भ किया परन्तु कुछ महीने बाद ही आपने त्याग। संग्राम में भाग लेने के लिए नौकरी छोड़ दी।

3. राजनीतिक क्षेत्र में पदार्पण करते ही आप महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू और मौलाना अबुल कलाम आजाद से बहुत प्रभावित हुए। आपने जम्मू और कश्मीर मुस्लिम कान्फ्रेंस को, जिसके आप 1932 में अध्यक्ष बने थे एक धर्म निरपेक्ष संस्था में बदल दिया और इसका नाम नेशनल कान्फ्रेंस रखा। इस प्रकार आपने सभी धर्मों के व्यक्तियों को स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने का अवसर प्रदान किया।

4. शेख मोहम्मद अब्दुल्ला का विश्वास था कि हमारे देश की विविध धर्मों और बहुभाषा वाली परम्परा प्रत्येक क्षेत्र की इस बात का पूरा-पूरा अवसर प्रदान करती है कि वह अपने विशिष्ट सांस्कृतिक व्यक्तित्व के माध्यम से सारे देश के व्यक्तित्व के निर्माण में योगदान दे सके। आपके विचार में धर्म को राज्य का आधार नहीं बनाया जा सकता। आपने श्री मोहम्मद अली जिन्ना द्वारा प्रतिपादित द्विराष्ट्र सिद्धान्त का दृढ़ता से विरोध किया। आप निष्ठावान लोकतंत्री नेता भी थे और सामन्तवाद के कट्टर विरोधी थे। महात्मा गांधी द्वारा भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के लिए किये गए आह्वाण का अनुसरण करते हुए महाराजा के शासन करने के अधिकार की अस्वीकार करते हुए और यह घोषणा करते हुए कि "प्रभुसत्ता पर जनता का अधिकार है" आपने 1946 में कश्मीर छोड़ी आन्दोलन प्रारम्भ किया इसके लिए आप पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया और आपको कैद की सजा दी गई।

5 1947 में, जब पाकिस्तान ने कश्मीर घाटी पर आक्रमण किया, उस समय आपने विदेशी आक्रमण के विरुद्ध लोगों को न केवल मातृभूमि की

रखा के लिए प्रेरित किया जल्कि भारत में विलय के लिए उनका समर्थन भी तैयार किया। आप राज्य की आपातकालीन सरकार के अध्यक्ष बने।

6. राज्य सरकार की बागडोर सम्भालने के बाद आपने एक जबरदस्त सुधार कार्यक्रम प्रारंभ किया। जमींदारी समाप्त की गई। लोगों को ऋण राहत दी गई। राज्य के लोगों की भलाई के लिए विभिन्न क्षेत्रों में योजनाएं और कार्यक्रम शुरू किए गए।

7. शेख मोहम्मद अब्दुल्ला भारतीय संविधान सभा के सदस्य थे और संविधान पर आपके हस्ताक्षर मौजूद हैं। आप 1948-49 में भारतीय प्रतिनिधि मंडल के सदस्य के रूप में संयुक्त राष्ट्र संघ में गए और आपने यह विचार व्यक्त किया कि कश्मीर में पाकिस्तान की कोई वैध स्थिति नहीं है क्योंकि कश्मीर का पहले ही भारत में विलय हो चुका है।

8. आपके उत्कृष्ट जीवन में एक नया अध्याय उस समय शुरू हुआ जब आपने फरवरी, 1975 में जम्मू और कश्मीर सरकार का नेतृत्व संभाला और अपने आखिरी दम तक आपने राज्य प्रशासन का निष्ठा और साहस के साथ मार्गदर्शन किया। आपकी संरक्षकता में राज्य ने विभिन्न क्षेत्रों में अच्छी प्रगति की।

9. शेख मोहम्मद अब्दुल्ला जीवन भर एकता, धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद तथा लोकतंत्र के आदर्शों का सम्मान करते रहे और इनकी वृद्धतापूर्वक वकालत करते रहे। आप जीवनभर फिरोज़पुरस्ते तथा प्रान्तीयता के विरुद्ध संघर्ष करते रहे और आपने अपनी सारी शक्तियां गरीबों को उठाने तथा देश की एकता को मजबूत बनाने में लगाईं। अपने राज्य के लिए वे पिता-मुल्य थे और शेर-ए-कश्मीर नाम से लोकप्रिय थे। शेख अब्दुल्ला महान देशभक्त थे। आपके निधन से देश ने अमाव्यारण कोटि और उपलब्धियों वाला एक राजनेता और स्वतन्त्रता सेनानी खो दिया है। भारत की जनता तथा भारत सरकार को आपकी मृत्यु से गहरा सवमा पहुंचा है।

त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी, सचिव

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

NOTIFICATION

New Delhi, the 11th September, 1982

OBITUARY

No. 3/6/82-Public—In the death of Sheikh Mohammed Abdullah, the country has lost one of its great sons. An embodiment of secularism, a democrat, a veteran freedom fighter and a staunch socialist, Sheikh Mohammed Abdullah dominated the political scene of the Jammu & Kashmir State for more than half a century.

2. He was born on December 5, 1905, at Soura, a suburb of Srinagar, in a shawl merchant's family. His father had died shortly before his birth and he lost his mother in childhood. After his Matriculation from the Government High School at Srinagar, he took his Bachelor's Degree from Islamia College, Lahore, and Master's Degree in Chemistry from Aligarh Muslim University. On returning to Kashmir in 1930, he started his career as a school teacher but threw up his job a few months later to join national struggle for freedom.

3. As he entered the political arena, he was greatly influenced by Mahatma Gandhi, Jawaharlal Nehru, and Maulana Abul Kalam Azad. He converted the J and K Muslim Conference, of which he became the President in 1932, into a secular forum and named it National Conference, thus affording equal opportunities to persons belonging to all faiths to participate in the freedom movement.

4. Sheikh Mohammed Abdullah believed that our country's multi-religious, multi-lingual heritage gave full opportunity for each region, with its distinctive cultural personality to contribute to the personality of the whole country. Religion, in his view, could not become the basis of the State. He firmly opposed the two-nation theory propounded by Shri Mohammed Ali Jinnah. He was also a staunch democrat, and was an articulate fighter against feudalism. Following the lead given by Mahatma Gandhi in the struggle for India's freedom, he launched the 'Quit Kashmir' movement in 1946 denouncing Maharaja's right to rule and declaring that "sovereignty belongs to the people". For this, he was tried for sedition and imprisoned.

5. In 1947, when Pakistan invaded the Kashmir Valley, he mobilised the people not only for the defence of the homeland against foreign aggression but also their support for accession to India. He became the Head of the State's Emergency Government.

6. After taking over the reins of the State Government, he launched a massive reform programme. Zamindari was abolished. The people were given debt relief. Schemes and programmes for the good of the people of the State in various fields were initiated.

7. Sheikh Abdullah was a Member of the Indian Constituent Assembly and was a signatory to the Constitution. He visited the United Nations as a Member of the Indian delegation in 1948-49 and held the view that Pakistan had no legal position in Kashmir because Kashmir had already acceded to India.

8. A new chapter in his distinguished life of service began when he resumed leadership of the Government in Jammu & Kashmir in February 1975 and up to his last day, he guided the administration of the State with dedication and drive. During his stewardship, the State made good progress in various fields.

9. Sheikh Mohammed Abdullah cherished and firmly advocated, throughout his career, the ideals of unity, secularism, socialism and democracy. He fought all his life against sectarian interests and parochialism, and devoted all his energies to the uplift of the poor and the strengthening of the unity of the country. For his State he was a father figure and was popularly called the Lion of Kashmir. Sheikh Abdullah was a great patriot. In him, the country has lost a statesman and freedom fighter of remarkable stature and achievement. The people and the Government of India mourn his death with profound grief.

T. N. CHATURVEDI, Secy.